डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा।

मैं नीर भरी दुख की बदली

प्रश्न : महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : महादेवी छायावादी कवियों में अपना एक अलग स्थान रखती हैं। उनकी कविताओं का मूल स्वर है वेदनावाद। वेदना में ही वह सुख की छाया ढूंढती हैं। वेदना ही उनका चरम लक्ष्य है।

प्रस्तुत कविता मैं 'नीर भरी दुख की बदली' उनकी ऐसी ही कविता है जिसमें उनकी वेदना का घनीभूत चित्र मिलता है। महादेवी जी कहती हैं- मेरे जीवन में दुख का इतना रूप में प्रसार हुआ है कि इस विषय में सहज यह धारणा की जा सकती है कि मेरा जीवन जलपूर्ण बदली के समान है। धरा का स्वरूप स्पन्दों से युक्त होता है, किंतु आकाश स्थिति स्थिति निस्पंद होती है। इसी प्रकार मेरे स्पंदनशील जीवन में संपूर्ण जड़ प्रकृति समायी हुयी है। जिस समय मेघ-गर्जन की ध्वनि होती है उस समय वर्षा के अभाव में व्याकुल संपूर्ण सृष्टि में प्रसन्नता छा जा जाती है। इसी प्रकार जब मैं संसार की वेदनामयी स्थिति को देखती हूँ, उसके हृदय में सहानुभूति का अनुभव कर हृदय में करने करने लगती हूँ। तब दुखों से पूरित सृष्टि मानो पुलकित हो जाती है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में वायु-मंडल में सर्वत्र जुगनुओं की व्याप्ति रहती है, उसी प्रकार मेरे नयनों में आशा का संदेश निहित है। जुगनू रूपी दीपकों की भाँति उनसे सृष्टि में सर्वत्र आलोक फैल जाता है। आकाश की धाराओं में सरिता का विशाल प्रवाह है और उसके समान ही मेरे नेत्रों के पलकों में भी संवेदना के प्रभाव स्वरूप संसार की पीड़ा अश्रु बहाने के लिए पर्याप्त है। यहाँ प्रत्येक गति संगीत से भरा है, साँसों में मानो मधुर पराग की वर्षा हो रही है, सुगंधित

पवन प्रवाहित हो रहा है। तात्पर्य यह कि पीड़ा के साथ-साथ (2)
मैं अपने जीवन में सुख की प्राप्ति का अनुभव कर रही हूँ।

आकाश की मेघमाला का प्रसार दूरवर्ती क्षितिज से प्राप्त होता है। जिस प्रकार क्षितिज में धूमिल आकार धारण करती है उसी प्रकार मेरी भौंह रूपी क्षितिज पर इस समय चिन्ता का धूमिल प्रसार हो रहा है। वर्षा की बूँदें संसार की शुष्क धूलि को सरसता प्रदान करती है और अनेक नए पौधों का विकास होता है, उसी प्रकार मैं भी सृष्टि की शुष्कता को अपनी मधुर संवेदनशील भावनाओं के योग से सरसता प्रदान करती हूँ और मानव जीवन में नवीन सौंदर्य को अंकुरित करती रहती हूँ।

जिस प्रकार आकाश में आकर बादलों की जल-वर्षा से आकाश की धूमिलता नष्ट हो जाती है और उसका रूप निखर उठता है और उसके चले जाने के आकाश में कोई अस्वच्छता शेष नहीं रहती, उसी प्रकार करुणा की भावना से काव्य साहित्य का रूप विकृत अथवा दूषित नहीं होता। जिस प्रकार शृंगार की भावनाओं से काव्य का रूप दूषित हो जाता है। प्रस्तुत करुणा भावना से साहित्य का रूप उज्ज्वल हो जाता है। करुणा की भावना हृदय में उस प्रकार वासना अथवा कुसंस्कार नहीं छोड़ देती जिस प्रकार शृंगार रस की अनुभूति हृदय में कुवासनाएँ छोड़ जाती है। बदली के आने से आकाश में हृदय में हर्ष की तरंगें खिल उठती हैं उसी प्रकार मेरे हृदय में करुणा की भावना समस्त प्राणियों के लिए भर उठती है।

इस प्रकार कवियत्री का कथन है कि मेरा परिचय इतना है कि कल मैं हृदय रूपी आकाश में उमड़ी थी और आज जन-गण को हरा-भरा करके मिट चली हूँ। उस कविता में कवियत्री ने अपने को पानी से भरी करुणा की बदली बतलाया है। उपमा अलंकार के सहारे अपनी करुणा के उद्देश्य को पुष्पित और पल्लवित किया है।

U.G. (Hindi Hon)
B. A. Part-I
"Main Nir Bhari Dukh ki Badli"